International Journal of Jyotish Research: 2018; 3(1): 01-02

International Journal of Jyotish Research
(वेदचक्षु)

ISSN: 2456-4427
Impact Factor: RJIF: 5.11
Jyotish 2018; 3(1): 01-02
© 2018 Jyotish
www.jyotishajournal.com
Received: 01-11-2017
Accepted: 02-12-2017

डॉ0 मधुकर मिश्र
संस्कृत विभाग,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

Correspondence
डॉ0 मधुकर मिश्र
संस्कृत विभाग,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

वेदों में जल तत्त्व का प्रतिपादन

डॉ0 मधुकर मिश्र

प्रस्तावना

वेद ज्ञान–विज्ञान की अमूल्य निधि है। मानव जाति का पुरातन इतिहास, रहन–सहन, आचार–व्यवहार की जानकारी के लिए वेद हमारे परम आदरणीय स्रोत हैं। भारतीय मनीषी वेद को परमात्मा का निःश्वास मानते हैं। ऋषियों ने अपनी निरन्तर तपोसाधना के चरम् परिणति के रूप में वेद मन्त्रों का दर्शन किया। वैदिक ऋचाओं के अध्ययन से हमें तत्कालीन सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक स्थितियों का बोध होता है। वैदिक वाङ्मय वारिधि के अगाध गाम्भीय का अवगाहन कोई सहज कार्य नहीं है। इसके लिए निरन्तर गहन अध्ययन, चिन्तन तथा मनन की आवश्यकता होती है। वेद का साङ्गोपाङ्ग अध्ययन किया जाय तो कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है, जिसका वर्णन इस आकर ग्रन्थ में न किया गया हो। सृष्टि के सभी तत्त्वों का सम्यक् प्रतिपादन वेदों में प्राप्त होता है।

जल सृष्टि का आदि तत्त्व है। मानव जीवन के लिए जल की महती आवश्यकता है। वेदों में सृष्टि की उत्पत्ति जल से ही बतायी गयी है। यही कारण है कि ऋषियों ने जल की स्तुति की है, इसकी महिमा की अभिव्यक्ति प्रस्तुत की है।

वर्तमान समय में जल–संरक्षण के विषय में चर्चा–परिचर्चा सभी जगह देखने–सुनने को मिलती है, एवं उसके उपाय खोजने का निरन्तर प्रयास भी किया जा रहा है। वेदार्थ के अनुशीलन से हमें ज्ञात होता है कि जल–संरक्षण के प्रति चेतना की जो लहर इस समय व्याप्त है, उसका मूल स्रोत वेद ही है। जल का अधिष्ठातृ देव वरुण है। जल में दिव्यत्व की स्थापना के मूल में हमारे ऋषियों की पर्यावरण चेतना ही थी। जल को शुद्ध रखने के अभिप्राय से वेदमन्त्रों में कहा गया है कि–

''शं नो देवीरभिष्टये आपो भवन्तु पीतये।
शं यो रभिस्त्रवन्तु नः।।''[1]

अर्थात् दीप्यमान जल हमारे अभिषेक के लिए या अभीष्ट के लिए और पीने के लिए सुखरूप हों। हमारे स्नान में तथा पान में सुखकारी हों। हमारे भय तथा रोग का नाश करें। ऋग्वेद के एक मन्त्र में कहा गया है कि नदियों आदि के जल को प्रदूषण मुक्त रखने में उपाय हैं– यज्ञ की सुगन्धित वायु जल के प्रदूषण को नष्ट करती है। यह एक वैज्ञानिक तथ्य भी है कि यज्ञ की आहुतियों से निकली हुई सुगन्धित वायु से ही वातावरण में व्याप्त प्रदूषण समूल नष्ट हो जाता है।

''आपो देवीरूपह्वये यत्र गावः पिबन्ति नः।
सिन्धुभ्यः कर्त्वं हविः।''[2]

आज के वैज्ञानिक युग में हम विज्ञान के सहारे भूमिगत जल को तो बोरिंग इत्यादि तकनीकि द्वारा प्राप्त कर लेते हैं; परन्तु वैदिक युग में यज्ञ द्वारा मानवीय प्रयत्नों से आकाशीय जल अर्थात् बादल से जल प्राप्त कर सकते थे; जो आज की वैज्ञानिक तकनीकि से भी नहीं प्राप्त किया जा सकता है। जिस तरह सूर्य के ताप से पृथ्वी का जल वाष्प बनकर वर्षा करता है उसी प्रकार यज्ञ में भी अग्नि से निकली वाष्प ऊपर जाकर बादल का रूप धारण करके पृथ्वी पर वर्षा करती है। जैसा कि श्रीमदभगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं–

''अन्नाद्भवन्तिभूतानि, पर्जन्यादन्न सम्भवः।
यज्ञाद्भवति पर्जन्यो, यज्ञः कर्म समुद्भवः।।''[3]

निरन्तर वृक्षों की कटाई, नदियों में औद्योगिक अपशिष्टों का प्रवाह तथा प्रदूषित वस्तुओं के प्रवाह से हमारे जीवन–यापन के लिए शुद्ध जल का निरन्तर अभाव होता जा रहा है।

जल, पेड़–पौधे इत्यादि हमारे प्रकृति का एक अभिन्न अंग हैं। अपनी प्रकृति का संरक्षण, प्रदूषण से उसकी रक्षा करना और हमारे लिए प्रकृति प्रदत्त जो उपहार हैं उनका सदुपयोग करना– ये हमारा परम कर्तव्य है। जल हमें जीवन प्रदान करता है। यह अमृत, भेषज्, रोगनाशक एवं आयुवर्धक है जैसा कि ऋग्वेद में कहा गया है–

अप्सु अन्तः अमृतम् अप्सु भेषजम्[4].....

एक ओर जहाँ शुद्ध जल रोगनाशक और आयुवर्धक है, वहीं दूषित जल हमारे लिए विषतुल्य है। इसीलिए यजुर्वेद में जल को प्रदूषित न करने और वृक्ष–वनस्पतियों को क्षति न पहुँचाने का निर्देश दिया गया है–

''मापो मौषधीर्हिंसी''[5]

जल तत्त्व एक स्वस्थ्य मनुष्य के लिए परमाश्वयक है। जल की शुद्धता पर ही जीवन की शुद्धता आधारित है। अथर्ववेदीय पृथिवीसूक्त में जल तत्त्व पर विचार करते हुए उसकी शुद्धता को स्वस्थ जीवन के लिए नितान्त आवश्यक माना गया है–

''शुद्धा न आपस्तन्वे क्षरन्तु''[6]

जल से पृथ्वी सदैव हरी–भरी रहती है। जल से ही समस्त कृषि उन्नतशील होती है। जन–जीवन सुखमय रहता है–
''वर्षेण भूमिः पृथिवी वृतावृता सानो दधातु भद्रया प्रिये धामनि धामनि''[7]
जल तत्त्व के वेग–प्रकोप से बचने के लिए वेदों में शान्ति के लिए प्रार्थनाएँ भी की गयी हैं–

द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवीं
शान्तिरापः शान्तिः.....[8]

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि जल–संरक्षण के प्रति जो चेतना आज हमारे समाज में जागृति हो रही है, उसका मूल स्रोत वेद ही हैं। ऋषियों ने जल जैसे जीवनदायक तत्त्व की शुद्धि के प्रति जागरूक रहने का सन्देश दिया है तथा इसमें आयी अशुद्धता को भी दूर करने के लिए प्रेरित किया है।
वैदिक वाङ्मय से लेकर साम्प्रतिक वाङ्मय में जल को एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण तत्त्व बतलाया गया है। जल और जीवन के तादात्म्य सम्बन्ध विषयक चिन्तन वर्तमान में अति प्रासंगिक हैं। सम्पूर्ण विश्व में जल तत्त्व के संचयन, संरक्षण पर निरन्तर शोध किया रहा है। वैश्विक स्तर पर जल तत्त्व पर चिन्तन हेतु सेमीनार, कांफ्रेंस आदि आयोजित किये जा रहे हैं।

संदर्भ सूची

1. शुक्ल यजुर्वेद माध्यन्दिन संहिता– 36–12
2. ऋग्वेद– 1–23–18
3. श्रीमद्भगवद्गीता
4. ऋग्वेद– 1–23–19
5. शुक्ल यजुर्वेद माध्यन्दिन संहिता– 7–22
6. अथर्ववेद– 12–1–30
7. अथर्ववेद– 12–1–53
8. यजुर्वेद– 36–17